मूल्यांकन के निकष पर 'मदरसा' उपन्यास

इशरत खान

किसी भी अच्छी रचना के लिए यह कहना कठिन होता है कि इसका उद्देश्य क्या है? अथवा इससे हमे क्या संदेश प्राप्त होता है। वह हमारे ही जीवन का एक ज्यादा उजले प्रकाश में बुना गया चित्र होता है जिससे हम अनेक दिशाओं में रोशनी पाते हैं और एक खुले माहौल में सांस लेने की सम्भावना की तलाश करते हैं जहाँ बंदिशें कम से कम हो।

प्रोफेसर, हिंदी विभाग
गोवा विश्वविद्यालय, गोवा

राही मासूम रजा, शानी की परंपरा में असगर वजाहत, नासिरा शर्मा, अब्दुल्ला बिस्मिल्लाह, मेहरुन्निसा परवेज और मंजूर एहतेशाम का हिन्दी कथालेखन में महत्त्वपूर्ण स्थान है।

'दास्तान-ए-लापता' और 'सूखा बरगद'जैसे चर्चित उपन्यासों के लेखक मंजूर एहतेशाम की 'मदरसा' नई औपन्यासिक कृति है जो २०११ में प्रकाशित हुई।

'मदरसा'उपन्यास व्यक्ति के अनगढ़ जीवन का एक ऐसा अभिलेख है जो समय के प्रभाव के चलते जीवन में आनेवाले भीतरी और बाहरी बदलावोंकी व्याख्या करता है। उपन्यास के संबंध में, उपन्यासकार का कहना है कि 'एक जाती दुनिया और एक आती दूनिया के बीच का एक वफा, एक अन्तराल होता है।' -१.

'मदरसा' उपन्यास में नायक साबिर की तीन पीढ़ियों की दास्तान है। सगे पिता, सौतले पिता, स्वयं साबिर और उनकी बेटी। उपन्यासकार ने साबिर के माध्यम से एक परिवार के सुखों-दुखों से भरी कहानी कही है। इनमें प्रेम, सौहार्द, एकता एवं भरोसे का अभाव है। उपन्यास के किसी भी पात्र को खूरचिए, उसके नीचे गिले शिकवे का एक जहान आबाद है।

इस संदर्भ मे एक उदाहरण उल्लेखनीय है - 'जिसमें शिकवे बरसते थे, शिकवों की खेती होती थी। लोग शिकवे पहनते, शिकवे खाते थे। शिकवा-शिकायत जिन्दगी का दूसरा नाम बना हुआ था।'-२.

उपन्यास का नायक भरे-पूरे परिवार का सदस्य है। उसके पिता सौतेले हैं इसलिए वह खुद को यतीम मानता है। पितृसत्तात्मक परिवार की यह एक बड़ी विडम्बना है, बाल-बच्चों वाली

स्त्रियाँ, जो दूसरी शादी कर लेती हैं, उनके पहले पति से उत्पन्न संतान खुद को, समाज एवं परिवार में उपेक्षित ही महसूस करती हैं।

साबिर को जब यह बात मालूम होती है कि वह अपनी माँ के पहले पति की संतान है तो वह खुद, अपने सौतले पिता और सौतेली बहनों से दूर रहने लगता है। यहीं से उसे यह चिन्ता भी सताने लगती है कि पिता की सम्पति और माँ के मेहर में से भी पता नहीं उसे कुछ हिस्सा मिलने का अधिकार है भी कि नहीं? जब वह जायदाद में हिस्सा माँगता है तो उसे निराश ही होना पड़ता है। मुस्लिम समाज में सौतेले पिता की जायदाद मे, पहले पति की संतान को हिस्सा देने का कोई कानूनी अधिकार नही है। मेहर की राशि भी उसे नहीं मिल पाती क्योंकि माँ के मेहर में केवल सवा रूपये ही मिले थे। इसके परिणामस्वरूप वह अपने जीवन के उस यथार्थ से परिचित होता है जहाँ उसे पारिवारिक रिश्ते एवं अन्य सगे सम्बन्धी भी झूठे एवं बेबुनियाद लगने लगते हैं।

साबिर यहीं से दिग्भ्रमित हो जाता है। इस स्थिति में वह चरित्रहीनता की ओर बढ़ने के बजाय सामाजिक और पारिवारिक मूल्यों की जाँच-पडताल करता है। इस भटकाव की स्थिति में मुंबई, भोपाल, अलीगढ़ और बरेली में अपने परिवार के सदस्यों के साथ उसकी मुलाकात होती है। इसमें साबिर के सगे 'अलीगढ़ के मामू' का एक अजीबोगरीब करेक्टर मिलता है। अलीगढ़ मामू ही साबिर के सगे पिता के विषय में विस्तार से बताते हैं। वे मुस्लिम होते हूए भी नास्तिक थे लेकिन इस्लाम धर्म एवं उर्दु-अरबी-फारसी साहित्य की उन्हें गहरी जानकारी थी।इसकी गवाही देता हुआ एक उदाहरण इस प्रकार है- 'मामू मुसलमानी दाढी रखते है, टोपी, कुर्ता-पैजामा, शेरवानी पहनते है और नमाज पढने से इनकार के बावजूद, उन्हीं मोटी-मोटी अरबी फारसी उर्दू और अंग्रेजी किताबों से घिरे रहते है जिनका ताल्लुक स्वीकार या इन्कार की सतह पर, कहीं इस्लाम और मुसलमानों से मिलता है।'३. साबिर को यह खूद मालूम न था कि मामू अपनी जिन्दगी से कितने सन्तुष्ट थे लेकिन वे, साबिर को दिमागी सुकून पहूंचाते थे।

अलीगढ़ मामू और नानीजान के आपसी संबंध भी तनावपूर्ण थे। वे विभाजन के बाद पाकिस्तान में बस गई थीं। वे बीच-बीच में हिन्दूस्तान आती रहती थीं लेकिन माँ (नानीजान) और बेटे की मुलाकात के अवसर भी कम ही आते थे। जब भी मिलते केवल दुआ-सलाम ही हो पाता था। अलीगढ़ मामू और नानीजान के संबंधो का खुलासा करते हुए साबिर कहता है - 'खुद उससे नानीजान को खास प्यार और लगाव था, जो सबको नजर आता और कई को जलने पर भी उकसाता था। इसके उलटे अलीगढ़ मामू से उनका (नानीजान) तनातनी का रिश्ता था, और उसकी याद में ऐसा कभी नहीं हुआ था कि वह पाकिस्तान से आई हो तो मामू के घर, अलीगढ या अम्मा के पास बम्बई मे ठहरी हों।'-४.

इस प्रकार अलीगढ मामू की जिन्दगी जीवनमूल्यों के प्रति, एक समूचे रवैया का नाम है जिसमें हार-जीत के नाम पर हुई उठा-पटक से, उसे कुछ लेना-देना नहीं था।

साबिर के पहले बाप की बहन बागी फफू आत्मनिर्भर एवं तेजतर्रार महिला थी।

बागी फफू ने आमदनी के लिए घर में एक मदरसा कायम किया था जिसमें बच्चे कुरान और दूसरे विषय पढ़ने आते थे। फफू बहूत प्रगतिशील विचारों की थी। उन्हें फफू बडी आपत्ति उस तालीम पर थी जो दोनों मदरसों मे दी जाती, और जिस तरह दी जाती थी।

मंजूर एहतेशाम अपने लेखन और सरोकरों में संकीर्णता के विरुध्द खुलेपन के हामी कथाकार है। 'सूखा बरागद' और तमाम कहानियों में वे अक्सर मानव जीवन के यथार्थ को महत्व देते हैं। 'मदरसा' उपन्यास में वे धर्म की एक नई व्याख्या करते हैं। वे मानते है कि 'जिंदगी तमाम मज़हबों से बड़ी और अव्वल है और मजहब सिर्फ उससे एक सही-सही रिश्तेदारी कायम करने की कोशिश और तालीम है।-५. वे शब-बरात को अल्लाह मियाँ का सालभर का बजट सेशन कहते

हैं। वे आगे कहते है 'यह शब-बरात हिन्दुओं की पितृमोक्ष अमावस्या की तरह है - वहाँ अमावस्या है और यहाँ पूरा चाँद इतना की फर्क है दोनों में।'-६.

यही धार्मिक उदारता उपन्यास के नायक साबिर के व्यक्तित्व में रची-बसी है - नायक साबिर, उपन्यासकार का बनाया हुआ ही शाहकार है। वह हिन्दू-मुस्लिम आदि सभी धर्मों को समान मानता है। इसीलिए वह (साबिर) एक खुबसूरत हिन्दू लडकी 'पिंकी' से साहसपूर्वक शादी कर लेता है। भिन्न धर्मों को लेकर कोई साम्प्रदायिक फसाद न हो इसलिए पिंकी, मरियम बन जाती है। इसके बाद पिंकी एक बेटी की माँ बनती है लेकिन साबिर मरियम का दाम्पत्य जीवन सुखी नहीं रह पाता है और वे अलग हो जाते है। इसमें मरियम का आर्थिक स्वावलम्बन भी अलगाव का कारण बनता है। इस अलगाव का भी साबिर के जीवन पर अत्याधिक प्रभाव पडता है और उसे अपना जीवन व्यर्थ नजर आने लगता है।

इसी दौर में साबिर के मन में एक मदरसा कायम करने का विचार आता है। एक ऐसा मदरसा जो गरीबों, लाचारों के शिक्षा का माध्यम बने। इस उदेश्य की पूर्ति के लिए वह जमीन खरिदना चाहता है लेकिन बिचौलिए जमीन का बाजार भाव बढाते ही जाते हैं। वह अर्थाभाव के कारण जमीन नहीं खरीद पाता है। इसके लिए वह सांसद इमरान आलम से भी मदद माँगता है। सांसद का चरित्र भी छल-कपट से भरा हुआ था। असल में सांसद की नजर उस जमीन पर थी। वे स्वयं ही उस जमीन को खरीदना चाहते थे। इसलिए सांसद का दोगला चरित्र साबिर की उम्मीदों पर पानी फेर देता है। यही उपन्यास एक ऐसी चरम दलील प्रस्तूत करता कि इस देश में पाठशाला से कहीं ज्यादा आसान और महत्वपूर्ण मकबरा बनाना है। सासंद के साथी, गनीमियाँ यही बात साबिर को समझाते रहते है। उसका मदरसा बनाने का सपना, सपना बनकर ही रह जाता है।

'मदरसा' उपन्यास में साबिर का सम्बन्ध फिल्मी दुनिया से भी जुड़ता है लेकिन यहाँ भी वह कामयाब नहीं हो पाता। ऐसी विषम परिस्थितियों में उसके चन्द दोस्त और शराब ही दिली सुकून पहूँचाते हैं।

प्रस्तूत उपन्यास में मुंबई, अलीगढ, बरेली और भोपाल शहरों का भी जिक्र किया गया है। भोपाल का तो बहूत ही विस्तार से वर्णन किया गया है जो वहाँ की सामाजिक, राजनीतिक स्थितियों को रेखांकित करता हैं। मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल एक ऐसा शहर है जो साहित्यिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों के लिए जाना जाता है। यह शहर शेरो-शायरी, नाटक, संगीत एवं नृत्य आदि कलाओं के लिए मशहूर है।

युनियन कार्बाइट फैक्टरी में गैस रिसने की घटना का उल्लेख भी किया गया है। इसमें अधिकतर गरीब मजदूरों की मौत हुई थी लेकिन, बड़े-बड़े अधिकारियों का इस घटना से कोई नाता नहीं था। इस संदर्भ में उपन्यासकार का कहना है 'मित्रो के फर्स्ट - पर्सन सिन्ग्यूलर अनुभव थे, उस रात के, और एक मान्यता थी, कि उस, शाम जिन्होंने पी या पी रहे थे, उनका सब कुशल-मंगल रहा। एक सप्ताह के ऑपरेशन फेथ के दौरान भी, जहाँ अन्य सारे बाजार बन्द और उजाड रहे, शराब की दूकानें आबाद और जगमगाती रहीं।'७.

परम्परागत शिल्प की जड़ता को तोड़ता हुआ उपन्यासकार एक नये शिल्प का आविष्कार करता है। सम्पूर्ण उपन्यास पाँच खंडो और छत्तीस (३६) अध्यायोंमें विभाजित है। हर अध्याय एक शीर्षक से प्रारम्भ होता है और शीर्षक के अनुरुप पात्रों की आन्तरिक उथल-पुथल एवं समाज के बदलाव के दृश्य अंकित होते रहते हैं।इसमें ही समग्र जीवन का यथार्थ चित्रण किया गया है जो मानवीय स्वार्थ, जरुरतें, सहुलियतें, चालाकियों और सामाजिक विद्रुपताओं को दर्शाता है।

मदरसा उपन्यास का एक महत्वपूर्ण आयाम भाषा प्रस्तुत उपन्यास की भाषा में उर्दू, अरबी, फारसी, अंग्रेजी शब्दों का भरपूर प्रयोग किया गया है। कहीं-कहीं तो एक पूरा पैरा उर्दू शब्दों से बोझिल हो गया है। इस संदर्भ में एक

उदाहरण दृष्टव्य है 'मेरी आपकी खूबी काबिलियत नहीं, वह तो लिया ही जा रहा है। इबरत, मातम खुशी, शादमानी, मिसालों की तरह तमाशे चल रहें हैं।'-८. इसके अतिरिक्त अंग्रेजी शब्दों का भी अधिकता से किया गया है। - कलीडोस्कोप, पैटर्न्स और डिजाइन, शोडाउन, गिल्टी टिल प्रुव्ड इन्नोसेंट आदि।

अनेक भाषाओ के कवियों के काव्यांशों के साथ, वेद, गीता के श्लोक आदि को उपन्यास में उद्धृत किया गया है । ' इस प्रसंग में कुछ उदाहरण इस प्रकार है -

१. गालिब के एक-दो शेर देखिए
गैर आज निगहे दीदा-ए-तस्वीर नहीं -९.
इस शमअुं की तरह से जिसको कोई बूझा दे।
मैं भी जले हुओं में, हुँ दागे नातमामी।-१०

इसके अतिरिक्त कबीर, सादी, रूमी, हाफिज, खैयाम से लेकर शेक्सपीयर, मिल्टन, गेटे, होमर, दाँते, हेगल, इब्ने अरबी, खसो आदि साहित्यकारों एवं दर्शनिकों का भी उल्लेख किया गया है।

उपन्यासकार एक अच्छा व्याख्याकार भी है। उन्होंने कुछ शब्दों की अच्छी व्याख्या की है जिससे पाठक वर्ग को अच्छी जानकारी मिलती है। वे शब-बरात में बरात शब्द की व्याख्या इस प्रकार करते हैं -

'ओह बारात' साबिर ने ठंडी साँस ली थी। वह बारात नहीं, यह बरात है। कहते हैं ना मुकदमें मे मुल्जिम बरी हो गया। यानी मुकदमा जीत गया। उस बरी से यह बरात, यानी मुक्ति, रिहाई, मगफिरत। आज रात इबादत कबूल की जाती है, गुनाह माफ किए जाते हैं, मरों के लिए, उनके मोक्ष की दुआ कबूल की जाती है। हिन्दुओं में भी तो होती है, पितृमोक्ष अमावस्या।११

किसी भी अच्छी रचना के लिए यह कहना कठिन होता है कि इसका उद्देश्य क्या है? अथवा इससे हमे क्या संदेश प्राप्त होता है। वह हमारे ही जीवन का एक ज्यादा उजले प्रकाश में बुना गया चित्र होता है जिससे हम अनेक दिशाओं में रोशनी पाते हैं और एक खुले माहौल में सांस लेने की सम्भावना की तलाश करते हैं जहाँ बंदिशें कम से कम हो।

संदर्भ :

१. मंजूर एहतेशाम: मदरसा : लेखक की ओर से
२. मंजूर एहतेशाम: मदरसा : पृ. ३१
३. मंजूर एहतेशाम: मदरसा : पृ. १४२
४. मंजूर एहतेशाम: मदरसा : पृ. १७९
५. मंजूर एहतेशाम: मदरसा : पृ. २९२
६. मंजूर एहतेशाम: मदरसा : पृ. २८६
७. मंजूर एहतेशाम: मदरसा : पृ. १२३
८. मंजूर एहतेशाम: मदरसा : पृ. २५५
९. मंजूर एहतेशाम: मदरसा : पृ. १६९
१०. मंजूर एहतेशाम: मदरसा : पृ. १९९
११. मंजूर एहतेशाम: मदरसा :पृ. २८६

इन्हें तुम सौन्दर्य मानते हो।...किसी भी निष्कलुष स्त्री की मुस्कान या एक रोते हुए बच्चे का अचानक हंस पड़ना या एक चिड़िया का इस डाल से उस डाल पर फुदकना—कोई भी एक भरी पड़ेगा / सुन्दर तभी जन्म लेती है जब उसमें इन्सान, पशु, पक्षी किसी का भी जीवन भीतर से खुशी पाये / इसलिए वही खूबसूरत है / तुम्हारे ये राष्ट्रीय राजमार्ग जो करोड़ों वृक्षों का वध करके बने हैं ये कैसे सुंदर हो सकते हैं / ये गाडियों और अमीरों कीसुविधा के लिए बनाये गये हैं / मॉल सामान बेंचने के लिए हैं / तुम्हारा ये औद्योगिक विकास, सेज वगैरह फलाना—ढिमाका जो किसानों की जमीन छीनकर तैयार हो रहे हैं, बांध बिजली परियोजनाएं जो इलाके की पूरी आबादी को बेघर, विस्थापित करके प्रकट हो रही हैं—सुंदर कैसे हो सकती हैं?

- अखिलेश 'निर्वासन'